P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

रेशम मार्ग – अतीत से वर्तमान तक एक अध्ययन

संतोष कुमार भामू
शोधार्थी,
इतिहास विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

मनुष्य ने सदैव ही एक स्थान से दूसरे स्थान तक भ्रमण करते हुए अपने पड़ोसियों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध कायम किए हैं तथा वस्तुओं, विचारों एवं कौशल का आदान–प्रदान किया है। इतिहास का पुनरावलोकन करने पर हम पाएंगे कि सम्पूर्ण इतिहास में यूरेशिया में संचार मार्गों एवं व्यापारिक पथों का जाल फैला हुआ था। यह नेटवर्क परस्पर मिलकर एक महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग का निर्माण करता था, जिसे वर्तमान में रेशम मार्ग के नाम से जाना जाता है। यह व्यापारिक नेटवर्क थल एवं जल दोनों पर विस्तृत था, जिसके माध्यम से दुनियाभर के लोग परस्पर रेशम व बहुत सी अन्य वस्तुओं का आदान–प्रदान करते थे। इस रेशम मार्ग में प्राचीन काल में भारत की मध्यस्थ की भूमिका थी। वर्तमान समय में चीनी राष्ट्रपति द्वारा वन बेल्ट वन रोड़ परियोजना की घोषणा की गई है। जिसके माध्यम से इस ऐतिहासिक व्यापारिक नेटवर्क को पुनर्जीवित करने की पहल की गई है।

मुख्य शब्द : रेशम मार्ग, मसाला मार्ग, यूरेशिया, हान राजवंश, वन बेल्ट वन परियोजना, सिल्क उत्पादन।

प्रस्तावना

रेशम मार्ग चीन में हान राजवंश द्वारा स्थापित व्यापारिक मार्गों का एक नेटवर्क था। इसके अन्तर्गत स्थलीय एवं समुद्री दोनों मार्ग सम्मिलित थे। आरम्भ में इसे रेशम मार्ग के नाम से नहीं जाना जाता था बल्कि इतिहासकारों के बीच धीरे–धीरे रेशम मार्ग नाम लोकप्रिय होता गया। सर्वप्रथम 1877 ई0 में जर्मन भूगोलवेता फर्डीनेंड वॉन रिचथोफेन ने इस व्यापार एवं संचार नेटवर्क के लिए 'Die Seidenstrasse' (द सिल्क रोड़) शब्द का प्रयोग किया। इसके बाद से ही इस नेटवर्क को 'सिल्क रोड़' के नाम से जाना जाने लगा।

वर्ष 2013 में चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग द्वारा सिल्क रोड़ को आधार बनाकर वन बेल्ट वन रोड़ (OBOR) नामक एक महात्वाकांक्षी परियोजना आरम्भ की गई है। जिसके कारण इस प्राचीन मार्ग ने एक बार पुनः बौद्धिक एवं आर्थिक जगत का ध्यान आकृष्ट किया है।

अध्ययन का उद्देश्य

रेशम मार्ग का ऐतिहासिक अध्ययन करते हुए इसके महत्व को रेखांकित करना एवं इसकी वर्तमान प्रासंगिकता को स्पष्ट करते हुए इसमें भारत की भूमिका का मूल्यांकन करना।

रेशम मार्ग की भौगोलिक स्थिति एवं विस्तार

यह मार्ग कोई एकल मार्ग न होकर मध्य, दक्षिण, दक्षिण–पूर्वी व पश्चिमी एशिया से होकर गुजरने वाले मार्गों का एक समूह था। जिसके अन्तर्गत प्राचीन चाय मार्ग, सुगंध मार्ग (दक्षिण अरेबिया से भूमध्यसागर तक विस्तृत इस मार्ग से सुगंधित द्रव्यों का व्यापार होता था) व समुद्री रेशम मार्ग (मसाला मार्ग) इत्यादि मार्ग सम्मिलित थे।

स्थलीय रेशम मार्ग 4000 मील लम्बा मार्ग था। यह मार्ग चंगन (आधुनिक शीआन) से आरम्भ होकर गांसू कोरिडॉर होते हुए आगे दो भागों में विभक्त हो जाता है, जिनमें से एक तकलामकान रेगिस्तान के उत्तर से जबकि दूसरा इसके दक्षिण से होकर गुजरता है तथा आगे चलकर ये दोनों काशगर में मिल जाते हैं। काशगर के आगे पुनः ये दो शाखाओं में विभक्त हो जाता है। इनमें से एक शाखा कोकंद, समरकंद होते हुए व दूसरी दक्षिणी शाखा बल्ख (बैक्ट्रिया) होते हुए मर्व (तुर्कमेनिस्तान) से पहले ही एक–दूसरे से मिल जाती है। इसके आगे यह ईरान, मेसोपोटामिया (इराक) होते हुए सीरिया के मुहाने पर एंटीयोक तक जाता था। फिर आगे भूमध्यसागर से होते हुए यह रोम तक जाता था। इस प्रकार यह चीन को मध्य एशिया, पश्चिमी एशिया होते हुए रोम से जोड़ता था।

बल्ख (बैक्ट्रिया) से तक्षशिला, मथुरा, पाटलिपुत्र होते हुए ताम्रलिप्ति तक एक मार्ग जाता था जो भारत को रेशम मार्ग से जोड़ता था। मथुरा से एक मार्ग फिर बेरीगाजा (भड़ौच) तक जाता था।

एक शाखा तूर्फान, उरूमकी, फरगना घाटी, कोकंद होते हुए कैस्पियन सागर के उत्तर से होकर काला सागर से होते हुए कुस्तुंतुनिया (तुर्की) तक जाती थी इसे स्टेपी घास क्षेत्र से होकर गुजरने के कारण यूरोपियन स्टेपी मार्ग भी कहा जाता था।

फिर खोतान के आस–पास एक मार्ग काराकोरम, तक्षशिला, सिंधु नदी के सहारे–सहारे होते हुए सिंधु नदी के मुहाने पर स्थित बारबेरिकम तक जाता था।

प्राचीन चाय मार्ग जो कि चीन के सिचुआन, युन्नान चाय उत्पादक क्षेत्र से तिब्बत की राजधानी ल्हासा तक जाता था, फिर आगे यह बंगाल व बर्मा तक विस्तृत था। चीन तिब्बत को चाय निर्यात करता था तथा बदले में तिब्बती घोड़े प्राप्त करता था। भारत में यह ल्हासा से सिक्किम के नाथुला दर्रे से होते हुए बंगाल तक जाता था। हालांकि इस मार्ग से रेशम का व्यापार नहीं होता था। फिर भी इसे चीन का दक्षिणी रेशम मार्ग कहा जाता था। इस मार्ग द्वारा चीन–तिब्बत–भारत के मध्य सांस्कृतिक आदान–प्रदान हुआ। वर्तमान में सिचुआन प्रान्त के चेंगडू से तिब्बत के ल्हासा तक एक हाइवे का निर्माण किया गया है।

समुद्री व्यापार इस वैश्विक व्यापार नेटवर्क की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण शाखा था। इस मार्ग से मुख्यतः मसालों का व्यापार होने के कारण इस मार्ग को मसाला मार्ग भी कहा जाता था। इन समुद्री मार्गों की जड़े हजारों वर्ष पूर्व अरब प्रायद्वीप, मेसोपोटामिया व सिंधु घाटी सभ्यता के मध्य के सम्पर्कों में खोजी जा सकती है। पूर्व मध्यकाल में अरब व्यापारियों ने अरब सागर व हिन्द महासागर के पार नवीन समुद्री मार्गों की खोज की जिससे प्राचीन समुद्री मार्गों का और अधिक विस्तार हुआ। वास्तव में चीन व अरबों के मध्य समुद्री व्यापार सम्पर्क सर्वप्रथम 8वीं सदी में स्थापित हुए। इस समय चीन में तांग राजवंश का शासन था।

यह समुद्री मार्ग 1500 किमी लम्बा था जो जापान के पश्चिमी किनारे से चीन के तट के सहारे दक्षिण–पूर्वी एशिया होते हुए भारत, मध्यपूर्व से गुजरते हुए भूमध्यसागर तक जाता था।

चीन में रेशम का उत्पादन एवं व्यापार

दुनिया में सर्वप्रथम रेशम निर्माण की कला चीन ने सीखी। ऐसी मान्यता है कि रेशम वस्त्र निर्माण की प्रक्रिया का आविष्कार सर्वप्रथम येलो शासक की पत्नी लेइजू ने 2700 ई0 पू0 के आस–पास किया। उसने बड़े पैमाने पर शहतूत के वृक्ष लगाए और उन पर रेशम कीट पालन द्वारा रेशम निर्माण आरम्भ किया।

रेशम कीट का पालन शहतूत के पेड़ पर किया जाता था तथा यह कीट अपनी कोकून अवस्था में एक मजबूत बारीक तन्तु का निर्माण करता है। इस तन्तु की सहायता से रेशम धागे एवं धागे से रेशम वस्त्र का निर्माण चीनी परम्परा के अनुरूप किया जाता था। प्राचीन चीन में सिल्क अत्यधिक कीमती उत्पाद था तथा सिल्क वस्त्र पहनना प्रतिष्ठा का सूचक माना जाता था। एक अत्यन्त उच्च मूल्य उत्पाद होने के कारण इसका उपयोग चीनी राजदरबार तक ही सीमित था। शासक वर्ग के उपयोग हेतु इससे वस्त्र, बैनर, पर्दे एवं अन्य प्रतिष्ठा की वस्तुएं बनाई जाती थी। रेशम उत्पादन की प्रक्रिया को चीन में तकरीबन 3000 वर्षों तक अत्यधिक गोपनीय रखा गया। किसी विदेशी व्यक्ति को इसके निर्माण की जानकारी देने वाले के लिए मृत्युदण्ड का प्रावधान था। चौथी एवं तीसरी शताब्दी ई0 पू0 की हुबेई प्रान्त की कब्रों से सिल्क निर्मित अनेक वस्तुएं यथा जरी वस्त्र, रेशम की जालीदार पट्टी, कढाईयुक्त रेशम एवं प्रथम पूर्ण रेशम परिधान मिला है। ये वस्तुएं सिल्क वर्क का उत्कृष्ट नमूना हैं। कुछ चीनी राजवंशों के काल में सिल्क का प्रयोग धन के रूप में अनेक वस्तुएं खरीदने के लिए किया गया।

सिल्क उत्पादन पर चीनी एकाधिकार का तात्पर्य यह नहीं था कि इस उत्पाद को केवल चीनी साम्राज्य तक ही सीमित रखा गया वरन् इसका उपयोग राजनयिक उपहार के रूप में किया गया तथा बड़े पैमाने पर इसका व्यापार भी किया जाता था। हान राजवंश के समय यह निर्यात की सबसे प्रमुख मद थी। उस समय के चीनी वस्त्र मिस्त्र, उत्तरी मंगोलिया एवं अन्य देशों में पाए गए हैं।

शहतूत रेशम कीट की मूल रूप से चीनी उत्पत्ति के कारण लगभग 200 ई0 पू0 तक विश्व में चीन का रेशम उत्पादन पर एकाधिकार कायम रहा जब तक कि कुछ चीनी कारीगरों के कोरिया में जाकर बस जाने के कारण वहां रेशम उत्पादन का कार्य प्रारम्भ नहीं हो गया। 300 ई0 के लगभग रेशम उत्पादन का कार्य भारत, जापान और पर्शिया तक फैल गया। 550 ई0 तक रेशम निर्माण की कला विजेंटियन साम्राज्य के माध्यम से यूरोप पहुंची। ऐसी मान्यता है कि विजेंटियन शासक जस्टिनियन के लिए कार्य करने वाले कुछ भिक्षुओं ने बांस निर्मित खोखली स्टिक में रेशम कीट के अंडों की तस्करी करके उन्हें कुस्तुनतुनिया तक पहुंचाया। 7वीं सदी में अरबों ने पर्शिया को विजित कर लिया और इस प्रकार पर्शिया से रेशम निर्माण की कला अरबों तक पहुंची और फिर अरबों के द्वारा अफ्रीका, सिसली व स्पेन को विजित करने के क्रम में यह कला इन क्षेत्रों में भी पहुंच गई। 10वीं सदी में एन्डलूसिया (स्पेन) यूरोप में रेशम उत्पादन का बड़ा केन्द्र था।

13वीं सदी में रेशम के क्षेत्र में इटली का यूरोप में प्रभुत्व कायम हो गया। वेनेशिया के व्यापारियों ने सिल्क का बड़े पैमाने पर व्यापार किया और सिल्क उत्पादकों को इटली में बसने को प्रेरित किया। आज भी इटली के कोमो प्रान्त में संसाधित रेशम की अत्यधिक प्रतिष्ठा है। यूरोप में इटालवी सिल्क इतना प्रसिद्ध था कि फ्रांस के शासक फ्रांसिस प्रथम ने इटली के सिल्क उत्पादकों को फ्रांस में विशेषकर लियोन में सिल्क उद्योग स्थापित करने हेतु आमन्त्रित किया। 17वीं शताब्दी तक फ्रांस रेशम निर्माण में इटली के प्रभुत्व को चुनौति देने लगा।

19वीं सदी में औद्योगीकरण के काल में यूरोपियन सिल्क उद्योग में गिरावट आई। विशेषकर सस्ता

जापानी सिल्क स्वेज नहर के रास्ते यूरोप आने लगा और फिर इस समय मानव निर्मित रेशे नायलॉन ने धीरे–धीरे सिल्क को प्रतिस्थापित कर दिया। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् जापान का सिल्क उद्योग पुनः स्थापित हो गया। 1970 तक जापान कच्चे सिल्क का सबसे बड़ा उत्पादक व निर्यातक बना रहा परन्तु इसके पश्चात् चीन ने उसका स्थान ले लिया और एक बार पुनः चीन कच्चे सिल्क का सबसे बड़ा उत्पादक व निर्यातक बन गया। वर्तमान में विश्व के कुल सिल्क उत्पादन का दो तिहाई उत्पादन चीन में होता है।

विभिन्न कालक्रमों में रेशम मार्ग की स्थिति

इस व्यापारिक नेटवर्क का उपयोग पश्चिमी हान राजवंश (206 बीसी–220 एडी) के एक राजनयिक व अधिकारी झांग कियान द्वारा व्यापार हेतु खोले जाने से लेकर 1453 ई0 में ऑटोमन साम्राज्य द्वारा पश्चिम के साथ व्यापार का बहिष्कार करते हुए इस मार्ग को बन्द कर दिए जाने तक निरन्तर तौर पर किया गया। हान राजवंश के काल में इस मार्ग का उदय एवं निरन्तर विकास हुआ। इस राजवंश के शासकों द्वारा हुणों के विरूद्ध निरन्तर युद्ध लड़कर इस मार्ग की समस्त बाधाओं को दूर किया। साम्राज्य के पश्चिम में महान दीवार का निर्माण हुआ, इससे भी इस मार्ग की सुरक्षा व्यवस्था पुख्ता हुई। फिर तांग राजवंश (618 ईस्वी–907 ई0) के तीव्र आर्थिक व सामाजिक विकास के काल में यह प्रसिद्ध व्यापारिक मार्ग अपनी उन्नत अवस्था में पहुंच गया। इस काल में यह व्यापारिक मार्ग अपने विकास की स्वर्णिम अवस्था में था।

1271 ई0 में मंगोल शासक कुबलाई खां ने एक शक्तिशाली मंगोल साम्राज्य युआन राजवंश की स्थापना की। इस राजवंश के काल में इस व्यापारिक मार्ग ने अपने प्रभाव व समृद्धि को पुनः प्राप्त किया। इस काल में रेशम मार्ग ने अपनी आखिरी समृद्धावस्था का अनुभव किया। मंगोल साम्राज्य ने बड़ी संख्या में चुंगी स्थलों व सिल्क मार्ग पर व्याप्त भ्रष्टाचार को समाप्त कर दिया। अब इस ऐतिहासिक व्यापारिक मार्ग से गुजरना पहले की अपेक्षा कहीं अधिक आसान, सुविधाजनक व सुरक्षित हो गया। मंगोल शासकों ने पश्चिमी देशों के यात्रियों का दिल खोलकर स्वागत किया और उन्हें दरबार में उच्च पद प्रदान किया। आगे चलकर समुद्री मार्गों की खोज व विस्तार से समुद्री परिवहन का विकास हुआ। 15वीं सदी के अन्त में पूर्तगाली वास्को डी गामा केप ऑफ गुड होप होता हुआ भारत पहुंचा। इस प्रकार उसने यूरोपियन नाविकों को दक्षिणी–पूर्वी एशिया की ओर जाने वाले इन मार्गों से अवगत कराया और अब यूरोपियन व्यापारी भी इस समुद्री मार्ग से होने वाले व्यापार के साथ जुड़ गए। समुद्री परिवहन एवं व्यापार के विकास ने रेशम मार्ग को प्रभावित किया और अन्ततः इस मार्ग ने अपनी प्राचीन समृद्धि एवं प्रभाव को खो दिया।

रेशम मार्ग एवं भारत

ईसा के बहुत पहले से ही भारत तथा चीन के बीच जल एवं थल दोनों ही मार्गों से व्यापारिक सम्बन्ध थे। प्रथम शताब्दी ईस्वी के मध्य एक चीनी ग्रंथ से पता चलता है कि चीन का हुआंग–चे (कांची) के साथ समुद्री मार्ग से व्यापार होता था। ईसा पूर्व की द्वितीय अथवा प्रथम शताब्दियों में भारत तथा चीन के बीच समुद्री मार्ग द्वारा विधिवत् सम्पर्क स्थापित हो चुका था। भारत व चीन के आरम्भिक सम्बन्ध पूर्णतया व्यापारपरक थे। चीनी सिल्क की भारत में अत्यधिक मांग थी। कालीदास ने भी चीनी रेशमी वस्त्र (चीनांशुक) का उल्लेख किया है। परन्तु शीघ्र ही व्यापार का स्थान धर्म प्रचार ने ले लिया तथा बौद्ध प्रचारकों के प्रयत्नों के फलस्वरूप भारतीय सभ्यता का चीन में व्यापक प्रसार हुआ। कुषाण शासक कनिष्क के समय में एक विशाल साम्राज्य की स्थापना हुई जिसमें गंगा, सिन्धु और ऑक्सस घाटियां सम्मिलित थी। सिल्क मार्ग की तीनों मुख्य शाखाओं पर कुषाण साम्राज्य का नियन्त्रण था – कैस्पियन सागर से होकर जाने वाले मार्ग पर, मर्व से फरात नदी होते हुए रूमसागर पर बने बंदरगाह तक जाने वाले मार्ग पर और भारत में लाल सागर तक जाने वाले मार्ग पर। इस समय चीनी रेशम व्यापार में भारतीय व्यापारियों ने मध्यस्थ के रूप में भाग लेना आरम्भ किया। इन मार्गों ने भारत व चीन के मध्य विभिन्न वस्तुओं के साथ कला, साहित्य, धर्मग्रंथों इत्यादि का आदान–प्रदान हुआ।

छठी सदी से पूर्व भारत, चीन व पश्चिमी देशों के मध्य होने वाले रेशम व्यापार में मध्यस्थ की भूमिका निभाता था परन्तु छठी सदी ईस्वी में यह स्थिति परिवर्तित हो गई जब बिजेन्टाईन साम्राज्य के लोगों ने रेशम बनाने की कला चीनी लोगों से सीख ली। फिर 7वीं–8वीं सदी में भारत की उत्तर–पश्चिमी सीमा पर अरबों के विस्तार के फलस्वरूप स्थल मार्ग भारतीय व्यापारियों के लिए असुरक्षित हो गए।

रेशम मार्ग का आर्थिक एवं सांस्कृतिक महत्व

इन विशाल व्यापारिक नेटवर्कों ने न केवल कीमती वस्तुओं एवं विभिन्न उत्पादों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ढोया है बल्कि इनके माध्यम से एक विशाल जनसमूह के निरन्तर गतिशील रहने व पारस्परिक सम्पर्क के फलस्वरूप ज्ञान, विचारों, संस्कृतियों एवं विश्वासों का भी संचार हुआ है। इसने यूरेशियाई लोगों के इतिहास एवं सभ्यता को गहराई से प्रभावित किया है। सिल्क रोड से होकर गुजरने वाले यात्रियों को न केवल व्यापार ने बल्कि सिल्क रोड के आस–पास के नगरों, जिनमें अधिकतर ज्ञान एवं संस्कृति के केन्द्र के रूप में विकसित हो चुके थे, में होने वाले बौद्धिक एवं सांस्कृतिक आदान–प्रदान ने भी आकर्षित किया। इस प्रकार विज्ञान, कला एवं साहित्य के साथ–साथ शिल्प और प्रौद्योगिकियों का इन मार्गों के निकटवर्ती समाजों में आदान–प्रदान एवं प्रसार हुआ जिसने आगे चलकर अनेक भाषाओं, धर्मों एवं संस्कृतियों के विकास में योगदान दिया और इन्होनें एक–दूसरे को प्रभावित भी किया। उदाहरणार्थ कुषाण काल में भारत से चीन में बौद्ध धर्म का प्रसार इसी मार्ग से हुआ। व्यापारियों के कारवां के साथ भारत के बौद्ध भिक्षु मध्य एशिया एवं चीन पहुंचे जिससे इन क्षेत्रों में बौद्ध धर्म का प्रसार हुआ। बौद्ध धर्म के अलावा पारसी धर्म, मानी धर्म, नेस्टोरियन एवं इस्लाम भी इन्हीं मार्गों के द्वारा चीन पहुंचे। चीन के चार महान आविष्कार कागज निर्माण, छपाई, गन पाउडर एवं दिशा सूचक यंत्र इन्हीं मार्गों से

होते हुए पश्चिमी देशों तक पहुंचे। इसके अलावा चीन से रेशम कीट पालन व रेशम निर्माण की कला भी इन्हीं मार्गों से पश्चिम में पहुंची। तकनीकी के अलावा स्थापत्य कला, संगीत, नृत्य इत्यादि का भी चीन व पश्चिमी देशों के बीच आदान–प्रदान हुआ।

सिल्क रोड की वर्तमान स्थिति एवं चीन की सिल्क रोड़ परियोजना

प्राचीन सिल्क रोड के महत्व को ध्यान में रखते हुए चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने अक्टूबर 2013 में एक महत्वाकांक्षी परियोजना 'वन बेल्ट वन रोड' (OBOR) दुनियां के समक्ष प्रस्तुत की। इस घोषणा के साथ ही एक लम्बे कालांतर के पश्चात इस ऐतिहासिक व्यापारिक मार्ग ने सम्पूर्ण जगत का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया है।

इस परियोजना के द्वारा चीन अफ्रीका, एशिया तथा यूरोपीय महाद्वीप को सड़क, रेल, बंदरगाह तथा अन्य अवसंरचनाओं द्वारा जोड़कर एक आर्थिक गलियारे का निर्माण करना चाहता है जिसका उद्देश्य आर्थिक विकास के साथ–साथ वैश्विक मंच पर चीन की रणनीतिक सर्वोच्चता को साबित करना है। इस परियोजना को 21वीं सदी के मार्शल प्लान का नाम दिया जा रहा है जो वैश्विक अर्थव्यवस्था के केन्द्र के रूप में चीन की स्थिति मजबूत करेगी।

वन बेल्ट वन रोड परियोजना के दो मुख्य तत्व हैं – पहला, सिल्क रोड इकॉनॉमिक बेल्ट (SREB)जो शीआन (चीन) को स्थलीय मार्ग से मध्य एशिया व यूरोप से जोड़ेगी। इसी की अन्य शाखाओं के रूप में एक शाखा चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC), एक अन्य बांग्लादेश–चीन–इंडिया–म्यांमार (BCIM) व दक्षिण पूर्वी एशिया (कुनमिंग–थाइलैंड–सिंगापुर रेल लिंक) इत्यादि है। दूसरा तत्व है मेरीटाइम सिल्क रोड़ जो पूर्वी तटीय प्रान्त फुजियान (चीन) से दक्षिण–पूर्वी एशिया और हिन्द महासागर होते हुए फारस की खाड़ी, अदन की खाड़ी व अन्ततः भू–मध्यसागर को जोड़ेगी।

OBOR के संदर्भ में भारत की भूमिका एवं महत्व

चीन चाहता है कि भारत उसकी इस महत्वाकांक्षी परियोजना में शामिल हो परन्तु भारत ने दो आधारों पर इस परियोजना में अविश्वास जताया है – पहला, चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC) जो कि OBOR का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह गलियारा पाक अधिकृत कश्मीर के हिस्से से होकर गुजरता है जिस पर भारत को कड़ी आपत्ति है। इसके अलावा भारत चीन की इस परियोजना को एक तरफा राष्ट्रीय प्रयास मानता है जिसमें दूसरे देशों की भूमिका महत्वपूर्ण नहीं है। CPEC पर भारत की आपत्तियों को चीन द्वारा दरकिनार कर देने पर वर्तमान समय में भारत इस योजना में शामिल होने की संभावना कम ही है। भारत ने मई 2017 में होने वाली पहली बेल्ट एण्ड रोड सम्मिट में शामिल होने से इन्कार कर दिया।

भारत द्वारा इस परियोजना का विरोध चीन की इस महत्वाकांक्षी पहल को न तो रोक सकता है और न ही पड़ोसी देशों को इसमें शामिल होने से रोक सकता है। भूटान को छोड़कर भारत के सभी पड़ौसी देश इसमें शामिल हो चुके हैं ऐसे में भारत इस क्षेत्र में अलग–थलग पड़ सकता है। कुछ विश्लेषकों का मानना है कि यदि भारत इस परियोजना में शामिल होता है तो इनके अनेक फायदे हो सकते हैं यथा इससे क्षेत्रीय सम्पर्क एवं सहयोग को बढ़ावा मिलेगा, भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान कर सकता है, भारत–चीन सहयोग का एक नया माध्यम साबित हो सकता है। क्षेत्रीय परिवहन, ऊर्जा सुरक्षा एवं ब्ल्यू इकोनॉमी ये OBOR परियोजना की मुख्य पहल है जो भारत के लिए फायदेमंद हो सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

A.J.H. Latham and Heita Kawakatsu, Japanese Industrialization and the Asian Economy.

"Belief Systems Along the Silk Road" : Asia Society Website.

Elisseeff, Vadime (2001). The Silk Road : Highways of culture and commerce.

Jerry H. Bentley, old world Encounters : Cross-cultural contacts and exchanges in pre-modern times (1993)

Sahoo, Pravakar (22 December 2015) : "India should be part of the new silk route" - The Hindu Business Line.

Vainkar, Shelagh (2004), Chinese Silk : A cultural history.

Wood, Francis (2002). The Silk Road : Two thousand years in the heart of Asia.

Xinhua News Agency (28 March 2015) "China unveils action plan on Belt and Road Initiative".

Xinru, Liu - "The silk road in word history (2010).